

## जन संस्कृति और लोकधारा के संदर्भ में अमृतलाल नागर के साहित्य का विश्लेषण

Naikwade Sujeet Prabhakar, Research Scholar, Department of Hindi, Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth, Udaipur

### सारांश

हिंदी साहित्य में अमृतलाल नागर का रचनात्मक व्यक्तित्व जनजीवन, लोकसंस्कृति और सामाजिक यथार्थ के सशक्त चित्रण के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके साहित्य में भारतीय समाज के विविध वर्गों, समुदायों, लोकविश्वासों, परंपराओं, रीति-रिवाजों तथा सांस्कृतिक जीवन की व्यापक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अमृतलाल नागर के साहित्य का जन संस्कृति और लोकधारा के संदर्भ में विश्लेषण करना है। नागर की रचनाओं में लोकभाषा, लोकगीत, लोककथाएँ, मुहावरे, कहावतें और स्थानीय बोलियों का प्रयोग उनके साहित्य को जनसामान्य के जीवन से गहराई से जोड़ता है। उनके उपन्यासों और अन्य रचनाओं में सामान्य व्यक्ति केवल कथा का पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का सक्रिय प्रतिनिधि बनकर उभरता है। वे लोकजीवन की सहजता और जीवंतता के साथ-साथ सामाजिक विषमता, रूढ़ियों, संघर्षों और परिवर्तनशील मूल्यों को भी अभिव्यक्त करते हैं। उनकी रचनात्मक दृष्टि में परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर संवाद दिखाई देता है। नागर ने इतिहास और संस्कृति को लोकानुभव से जोड़कर भारतीय समाज की बहुआयामी संरचना को प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि उनका साहित्य लोकधारा को संरक्षित करने के साथ-साथ उसके भीतर निहित सामाजिक चेतना और परिवर्तन की संभावनाओं को भी सामने लाता है। इस दृष्टि से अमृतलाल नागर का साहित्य जन संस्कृति के अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत है।

**मुख्य शब्द:** अमृतलाल नागर, जन संस्कृति, लोकधारा, लोकजीवन, लोकसंस्कृति, लोकभाषा, जनचेतना, सामाजिक यथार्थ, लोकपरंपरा, सांस्कृतिक चेतना, भारतीय संस्कृति, परंपरा और आधुनिकता।

